Holistic Thought

Multidisciplinary Journal of Sree Narayana College, Kollam

ISSN 0975-363X Holistic Thought
Vol. XVIII; No. 1&2
January-December 2019

Volume XVIII No. 1 & 2 2019

Holistic Thought

Editor

P.M. Joshy
(Department of Political Science)

Managing Editor

R. Sunilkumar
(Principal)

Editorial Board

B. Hari *(Department of Zoology)*
Dedhila Devadathan *(Department of Physics)*
Greeshma P. *(Department of Bio-technology)*
Latha Sadanandan *(Department of Botany)*
Mahesh S. *(Department of Hindi)*
Rijith S. *(Department of Chemistry)*
Sreeja Priyadersini *(Department of Sanskrit)*
T.G. Ajayakumar *(Department of English)*

Editorial Advisory Board

A.K. Ramakrishnan, Centre for West Asian Studies,
Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
C.R. Prasad, Department of Malayalam, *University of Kerala.*
G. Padma Rao, Department of Malayalam, *University of Kerala.*
G. Prasad, Department of Zoology, *University of Kerala.*
J. Prabhash, Department of Political Science, *University of Kerala.*
K.P. Fabian, Formerly Ambassador to Italy, *Government of India.*
Mohanan B. Pillai, Department of Politics and International Studies,
Pondicherry Central University.
S. Sreenivasan, Department of English, *Sree Narayana College, Kollam.*
T.V. Paul, Department of Political Science, *McGill University, Montreal, Canada.*

Volume XVIII No. 1 & 2 2019 **Holistic Thought**

Contents

Editorial

India's Foreign Policy: Idealism or Realism? 11-16
K.P. Fabian

Non-Alignment to Multi-Alignment? India's Quest to Achieve Strategic Autonomy through Strategic Partnerships 17-28
B. Krishnamurthy

India's Kazakhstan Policy in Central Asia: An Overview 29-42
Vishakh Krishnan Valiathan

Inclusive Development- An enquiry into the basic tribal indicators of Kerala 43-56
Aparna P.

Water Quality Analysis in Ashtamudi Site of Ashtamudi Lake by Physico-Chemical Characterization Studies 57-60
Latha Sadanandan, Reemraj & Ancy Nazeer

The Martyrdom of the Great Velayudha Panicker 61-70
N. Sasidharan

'ബർസ'യിലെ ഖുറാൻ 71-78
N. Sreeja

'തട്ടുംപുറത്ത് അച്യുതനി'ലെ സ്വപ്നങ്ങൾ 79-84
Kiran Mohan M.

മാധ്യമ മൊണോപ്പോളിയും ദളിത് വ്യവഹാരവും 85-100
Kishor K.

श्री नारायण धर्म : विश्वमानविकता का सन्देश 101-112
Mahesh S.

Book Review
Authoritarian Populism and Liberal Democracy 113-116
P.M. Joshy

HOLISTIC THOUGHT
XVIII (1&2) pp. 101 - 112
ISSN 0975-363X
©SNC Kollam 2019
http://www.snckollam.ac.in

श्री नारायण धर्म : विश्वमानविकता का सन्देश

महेष

श्री नारायण धर्म शीर्षक ग्रंथ मूल संस्कृत भाषा में श्रीनारायण गुरु द्वारा अपने बोधानन्द स्वामी जैसे शिष्यों की शंका-निवृत्ति करने के तरीके में दिया गया धर्मोपदेश है। गुरुदेव के प्रमुख शिष्य तथा बाद में आलुवा अद्वैत आश्रम के संस्कृत आचार्य के रूप में नियुक्त आत्मानन्द स्वामी इसे लिख लेते थे और उसी दिन ही गुरु को इसे पढकर सुनाते थे तब गुरु इसमें अवश्य संशोधन तथा सुधार भी बता देते थे। प्रस्तुत ग्रंथ दस अध्यायों में विभक्त है। संस्कृत भाषा में धर्म शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ी भाषा के रिलिजियन (Religion) की भाँति सीमित अर्थ में नहीं होता। पाठकों का ध्यान यहाँ धर्म शब्द के अन्य अर्थ की ओर भी अवश्य पहुँचें। इस शब्द का नीति, पुण्य, सत्कर्म, सदाचारपूर्ण एक जीवन जीने का तरीका आदि अर्थ भी पा सकेंगे। ग्रंथ का अध्ययन करते समय यह बात सटीक स्पष्ट भी होगी कि मनुष्य के लिए एक जाति, एक धर्म तथा एक ईश्वर माननेवाले श्री नारायण गुरु का उद्देश्य कभी भी एक नये धर्म की स्थापना की ओर नहीं रहा। एक बार गुरु ने अपने शिष्यों द्वारा पूछे जाने पर इस पर अपना मंतव्य व्यक्त किया कि "आजतक जितने धर्म हैं वे तो काफी हैं। सभी धर्म एक ही सत्य का उद्घाटन करते हैं कि मनुष्य को भला बनना चाहिए। आज भी मनुष्य धर्म के नाम पर आपस में झगड रहे हैं। आगे हमारे द्वारा एक और धर्म की स्थापना करना, इस झगडे को बढावा देने की तरह होगा।" गुरु का संपूर्ण जीवन और कर्मकाण्ड इसका प्रमाण बनकर हमारे सामने है।

अशान्त समसामयिक वातावरण को पहचान पाना ही श्रीनारायण गुरु का पहला भला कर्म रहा। "स्वामी जी बचपन में शान्त नहीं थे। वे काफी जोशीला लडका थे। कुछ बातों में थोडे नटखट भी थे। घर में पूजा के लिए तैयार रखे फल और मिठाइयाँ पूजा शुरु होने के पहले ही उठाकर खाने में बचपन में खास कौशल दिखाते थे। "मैं प्रसन्न हो जाऊँ तो ईश्वर भी प्रसन्न हो जाएँगे" वे ऐसा कहते थे। अगर किसी ने भी उनका यह कार्य रोकने की कोशिश की तो

वह अत्यन्त व्यथित होता था। छुआछूत के शिकार बने निम्न वर्ण के लोगों को कहीं देखा तो दौड़कर उनके पास जाकर उन्हें छू लेने के बाद नहाने के बिना घर की रसोई में घुसकर वहीं की स्त्रियों को छूना या ज्यादा शुद्धता का आचरण करनेवाले पुरुषों को छूना तथा उन्हें बार-बार नहाने की मुश्किल में डालना आदि बच्चे के मन-बहलाव के कार्य थे। मलयालम भाषा के प्रमुख कवि तथा गुरु के प्रिय शिष्य कुमारनाशान के द्वारा बतायी गयी यह अशान्ति, जोशीलापन, नटखटपन, रूढ़िगत रीति-रिवाज़ों के प्रति निषेधात्मक मनोभाव, दूसरों को पराजित करने का सामर्थ्य, खोज आदि ने उन्हें कालांतर में पहुँचा दिया समाज के सच्चे मार्गदर्शक के स्थान में।

शादी के साथ ही वैवाहिक जीवन समाप्त कर पारिवारिक बंन्धनों से मुक्त होकर अवधूत बनने की घटना के बारे में गुरु अपनी ही वाणी में- "चलता रहा। हमें ही कोई धारणा नहीं थी। कहीं भी स्थिर न रुक पाता। चैन नहीं। अष्टबाहु जकड रहा है। उसका बंधन खोलने की कोशिश की। जंगल में बैठा। गुफा में बैठा। देश-देशान्तर घूमा। मरुत्वामला पर्वत में कुछ दिन बसा। वहाँ की एकान्तता से थोड़ी शान्ति मिली। अनन्त अनुभूति की स्थिति, बाहर भी अनन्त और अन्दर भी अनन्त। कई आवेगों से भ्रमित मन कहीं डूब जाने का एहसास।" यह अवस्था भी एक प्रकार की साधना रही। इस साधना ने समाज के अभिभावकीय स्थान की ओर गुरु को आगे बढ़ाया।

आजीवन अवधूत रहे गुरु आजीवन क्रान्तिकारी भी रहे। इस क्रान्तकरी संन्यासी ने जीवन के आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों स्थितियों में निम्नजातीय लोगों को मुक्ति देने के लिए ही गुरु पद स्वीकार किया था। तत्कालीन सामाजिक जीवन की सड़ी रीति-रिवाज़ों ने अवधूत बने गुरु के मन को क्षुब्ध कर दिया। हिन्दू धर्म ब्राह्मण के कारागृह में बन्दी पडा था। उन्होंने मन्दिर के चहारदीवारों के अन्दर धार्मिक-संस्कारों को बंद कर रखा था। मनुष्य जन्म लेने से बात नहीं बनती ब्राह्मण जन्म लेना था। तब उन्हें पढ़ाई, मन्दिरों में प्रवेश, धार्मिक-संस्कार तथा जीवन के अन्य सुख-सुविधायें भोगने का अवसर मिलता था। अनेक शताब्दियों से सवर्ण हिन्दू लोगों की निर्दयता तथा नीचता से दबे-कुचले एक बडे जन-विभाग को आध्यात्मिक एवं लौकिक उन्नति की ओर बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता पर गुरु पहुँचे। एक पत्थर के द्वारा सामाजिक तौर-तरीके की रूढि को उजाड देना असाधारण कार्य है। पत्थर को शिवलिंग बनाकर समाज की पुनःसृष्टि के लिए प्रयुक्त करने के पीछे की प्रायोगिकता वास्तव में गुरु की विशिष्ट मेधा-बुद्धि का प्रमाण भी रही। मूर्ति रूप में शिवलिंग की स्थापना कर सैकडों सालों से हिन्दू धर्म जिन भद्दे अनुष्ठानों के अन्धे अनुकरण में लगा था उन अमानवीय रीति-रिवाज़ों को ही तोड डाला था। "उस समय तक ब्राह्मण लोग अपने एकाधिपत्य में रखी आध्यात्मिक सोच ईषवा वर्ण के लोगों से भी हो सकती है, ब्राह्मण के आश्रय के बिना ईषवा वर्ण के लोग अपने ही पैरों में खडे होकर ईश्वर आराधना के लिए मन्दिरों की स्थापना कर सकते हैं। अपने व्यावहारिक जीवन के द्वारा गुरु ने उनके सामने जो कार्य प्रस्तुत किया उससे जो कठोर प्रहार मिला उसे इससे पहले कभी भी केरल के अभिजात वर्ग को खाना न पडा था। ऐसी जोशीली क्रान्ति का दूसरा एक नमूना ईषवा या अन्य किसी समुदाय ने इससे पहले कहीं नहीं देखा।" ई.एम.एस.